न्यूज़ टुडे

"ग्लोबल ड्रॉट आउटलुक 2025" जारी किया गया

यह रिपोर्ट **आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (OECD)** ने जारी की है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **सूखे की गंभीरता में वृद्धि:** दुनिया का **लगभग 40%** भूमि क्षेत्र सूखे की बार-बार और गंभीर स्थिति का सामना कर रहा है।
  - गंभीर सूखे के कुछ हालिया उदाहरणों में **2022 का यूरोप में पड़ने वाला सूखा, 2021 का कैलिफोर्निया सूखा, और हॉर्न ऑफ अफ्रीका (विशेष रूप से सोमालिया)** में सूखा शामिल हैं।
- **आर्थिक प्रभाव:** सूखे की औसत अवधि से **आर्थिक हानि हर साल 3% से 7.5% तक बढ़** रही है।
  - **भारत, ऑस्ट्रेलिया** जैसे देशों में जल से जुड़ी समस्याओं के कारण जलविद्युत ऊर्जा संयंत्रों का संचालन बाधित हो सकता है।
  - **अंतर्देशीय नदी परिवहन प्रणाली पर प्रभाव** पड़ता है (जैसे हाल ही में पनामा नहर में सूखे के कारण समस्याएं हुई थी)।
  - फसल की पैदावार में **22% तक की गिरावट** आ सकती है।
- **पारिस्थितिक प्रभाव:**
  - **मृदा की नमी में गिरावट:** 1980 के बाद से, वैश्विक भूमि के **37% हिस्से में मृदा की नमी में उल्लेखनीय गिरावट** देखी गई है।
  - **भूजल स्तर में गिरावट:** पूरी दुनिया में भूजल स्तर नीचे जा रहा है, और **62% निगरानी किए गए जलभृतों (aquifers)** में लगातार गिरावट दर्ज की गई है।
- **अन्य प्रभाव:**
  - विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO), 2021 के अनुसार सभी आपदाओं से होने वाली मौतों में से **34% मौतें सूखे की वजह** से होती हैं। इसके अलावा, सूखा **गरीबी, असमानता और लोगों के पलायन** की समस्याओं को और भी ज़्यादा बढ़ा देता है।

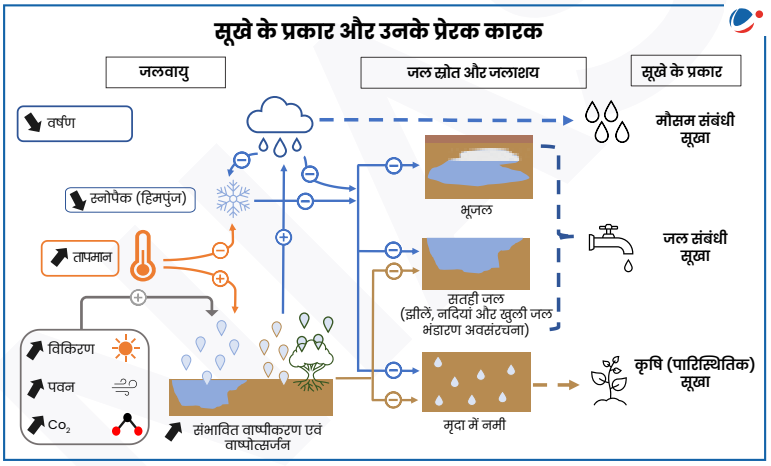

सूखे की रोकथाम के लिए शुरू की गई प्रमुख पहलें

- **वैश्विक स्तर पर शुरू की गई पहलें:**
  - **संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय (UNCCD)** की सूखा पहल
  - **अंतर्राष्ट्रीय सूखा प्रबंधन कार्यक्रम:** इसे WMO और ग्लोबल वॉटर पार्टनरशिप मिलकर संचालित कर रहे हैं।
- **भारत में आरंभ की गई पहलें:**
  - **राष्ट्रीय कृषि सूखा आकलन और निगरानी प्रणाली (NADAMS):** सूखे की निगरानी और मूल्यांकन के लिए।
  - **वाटरशेड विकास कार्यक्रम (प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना का हिस्सा: WDC-PMKSY):** जल की बचत और भंडारण के लिए।
  - **अटल भूजल योजना:** भूजल स्तर सुधारने के लिए।

एक नए ऐतिहासिक अध्ययन में ब्रह्मांड के "अज्ञात" सामान्य पदार्थ की अवस्थिति का पता चला

हार्वर्ड एंड स्मिथसोनियन (CfA) और कैलटेक के वैज्ञानिकों ने पहली बार ब्रह्मांड के अज्ञात **सामान्य पदार्थ (ordinary matter)** का पता लगाया है। उन्होंने इस खोज के लिए **फास्ट रेडियो बर्स्ट (FRBs)** नामक शक्तिशाली ब्रह्मांडीय संकेतों का उपयोग किया।

- इससे पहले, वैज्ञानिकों को पता था कि ब्रह्माण्ड के **सामान्य या बैरियोनिक मैटर का कम-से-कम आधा हिस्सा अज्ञात** है।

ब्रह्मांड में सामान्य पदार्थ का वितरण

- **76% अंतर-आकाशगंगा माध्यम (intergalactic medium - IGM) में:** यह आकाशगंगाओं के बीच की पतली गैस है।
- **15% आकाशगंगा प्रभामंडल (galaxy halos) में:** ये आकाशगंगाओं के बाहरी क्षेत्र हैं।
- **9% आकाशगंगाओं के भीतर:** इनमें तारे, ग्रह और गैस एवं धूल के विशाल बादल शामिल हैं, जो सभी गुरुत्वाकर्षण से बंधे होते हैं।

फास्ट रेडियो बर्स्ट्स (FRBs) क्या हैं?

- **परिभाषा:** FRBs, **रेडियो-तरंग आवृत्तियों में विद्युत-चुम्बकीय विकिरण का एक चमकदार और क्षणिक विस्फोट** है। ये आमतौर पर हमारी आकाशगंगा से परे की आकाशगंगाओं में घटित होते हैं।
  - FRBs की अवधि **कुछ मिलीसेकंड से लेकर कुछ सेकंड** तक होती है।

फास्ट रेडियो बर्स्ट्स (FRBs) ने रहस्य सुलझाने में कैसे मदद की?

- FRBs ने "**कॉस्मिक फ्लैशलाइट्स**" के रूप में काम किया। जब FRBs अंतरिक्ष में गमन करते हैं, वे-
  - अलग-अलग तरंग दैर्ध्य में **प्रकीर्णित (Dispersion)** हो जाते हैं, जैसे एक प्रिज्म सूर्य के प्रकाश को फैलाता है।
  - प्रकीर्णन की डिग्री उनके मार्ग में पदार्थ की मात्रा को दर्शाती है।
- FRBs ने **कॉस्मिक वेब** में पदार्थ वितरण का **प्रथम प्रत्यक्ष माप (First direct measurement)** प्रदान किया है और विश्वसनीय **ब्रह्मांडीय अन्वेषण** में स्वयं को सही सिद्ध किया है।

सामान्य पदार्थ (बैरियोनिक मैटर) बनाम डार्क मैटर

सामान्य पदार्थ (बैरियोनिक पदार्थ)

- इसमें गैस, धूल, तारे, ग्रह और रोजमर्रा के पदार्थ (जैसे जल) शामिल हैं, जो विद्युत चुम्बकीय विकिरण (यानी प्रकाश) के साथ **परस्पर क्रिया** करते हैं।
- यह ब्रह्मांड में सभी पदार्थ का लगभग **15% बनाता** है।
- डार्क मैटर के विपरीत, सामान्य पदार्थ **बैरियन (जैसे प्रोटॉन, न्यूट्रॉन)** से बना होता है।

डार्क मैटर

- यह एक रहस्यमय पदार्थ है, जो **ब्रह्मांड के भौतिक पदार्थ का लगभग 85% बनाता** है लेकिन अदृश्य रहता है, क्योंकि यह **प्रकाश के साथ परस्पर क्रिया नहीं** करता।
- डार्क मैटर **सामान्य पदार्थ के साथ बहुत कमजोर या बिल्कुल भी परस्पर क्रिया नहीं** करता।

समानताएं

- दोनों पदार्थ हैं, जिसका अर्थ है कि उनमें **द्रव्यमान होता है और वे स्थान घेरते हैं।**
- दोनों **गुरुत्वाकर्षण बल** लगाते हैं।

ग्रीन इंडिया मिशन (GIM) के संशोधित मिशन डॉक्यूमेंट्स जारी किए गए

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने **17 जून को विश्व मरुस्थलीकरण और सूखा रोकथाम दिवस** के अवसर पर ग्रीन इंडिया मिशन से संबंधित नए डॉक्यूमेंट्स जारी किए।

ग्रीन इंडिया मिशन के बारे में

- **शुरुआत:** ग्रीन इंडिया मिशन की शुरुआत **2011** में हुई थी। यह **राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC) के आठ मिशनों में शामिल** है।
- **उद्देश्य:**
  - **वन/ गैर-वन क्षेत्रों में वन और वृक्ष आवरण में वृद्धि करना:** मिशन के तहत 24 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में वृक्षारोपण का लक्ष्य रखा गया है।
  - **पारिस्थितिकी-तंत्र सेवाओं में सुधार करना:** इसमें वायुमंडल से कार्बन का अवशोषण और भंडारण भी शामिल हैं।
  - वर्ष **2030 तक 2.5 से 3.0 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) के समतुल्य अतिरिक्त कार्बन सिंक का निर्माण** करना, आदि।
- **ग्रीन इंडिया मिशन के तीन उप-मिशन निम्नलिखित हैं:**
  - वन क्षेत्र की गुणवत्ता और पारिस्थितिकी-तंत्र सेवाओं में सुधार;
  - वन/ वृक्ष आवरण बढ़ाना और पारिस्थितिकी-तंत्र की पुनर्बहाली; तथा
  - वनों पर निर्भर समुदायों की आय और आय-स्रोतों को बढ़ाना।
- **वित्त-पोषण:** आंशिक वित्त-पोषण मिशन के लिए **आवंटित राशि** से और शेष वित्त-पोषण **'राष्ट्रीय प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण (CAMPA)'** से प्राप्त होगा।
- **क्रियान्वयन अवधि:** 10 वर्ष (2021 से 2030 तक)।
- **क्रियान्वयन एजेंसी:** यह मिशन बॉटम-अप मॉडल पर आधारित है। **संयुक्त वन प्रबंधन समितियां (JFMCs)** इस मिशन की प्रमुख क्रियान्वयन एजेंसियां हैं।

ग्रीन इंडिया मिशन की प्रमुख रणनीतियां

{ये रणनीतियां भारत की राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) प्रतिबद्धताओं से संबद्ध हैं}:

- **सूक्ष्म पारिस्थितिकी-तंत्र पद्धति को अपनाना:** यह मिशन **अरावली, पश्चिमी घाट, उत्तर-पश्चिम भारत के शुष्क क्षेत्र, मैंग्रोव, भारतीय हिमालयी क्षेत्र (IHR)** जैसे अति-नाजुक क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देगा।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी:** जैसे- **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)** निधियों का उपयोग अति-महत्वपूर्ण पारिस्थितिक क्षेत्रों की पुनर्बहाली में या संरक्षण के प्रति समर्पित व्यक्तियों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों को सहायता प्रदान करने में किया जाएगा।
- **कार्बन मार्केट का लाभ उठाना:** वानिकी और कृषि-वानिकी वृक्षारोपण से अर्जित कार्बन क्रेडिट्स की स्वैच्छिक कार्बन मार्केट में बिक्री को बढ़ावा दिया जाएगा।
- **प्रो-एक्टिव ग्रीन इंडिया फोर्स की स्थापना:** समर्पित, इच्छुक और प्रशिक्षित युवाओं का एक कैडर गठित किया जाएगा। यह कैडर परियोजनाओं के क्रियान्वयन, रखरखाव एवं परिसंपत्तियों की निगरानी में सहयोग करेगा।

कनानस्किस (कनाडा) में G-7 नेताओं का शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ

भारत ने **कनानस्किस** में आयोजित **51वें G-7 शिखर सम्मेलन (2025) में एक आउटरीच देश** के रूप में भाग लिया।

51वें G-7 शिखर सम्मेलन (2025) के परिणाम:

- **कनानस्किस वाइल्डफायर चार्टर:** इसके तहत **2030 तक** वैश्विक स्तर पर वनों की कटाई तथा वन और भूमि क्षरण को रोकने एवं उसे ठीक करने पर सहमति जताई गई है। यह चार्टर पूर्व में की गई प्रतिबद्धताओं जैसे- **ग्लासगो लीडर्स डिक्लेरेशन ऑन फॉरेस्ट्स एंड लैंड यूजज, 2021** के अनुरूप है।
  - **भारत ने इस चार्टर का समर्थन** किया है।
- **G-7 क्रिटिकल मिनरल्स एक्शन प्लान लॉन्च किया गया:** यह एक्शन प्लान 2023 में **जापान की G-7 अध्यक्षता के दौरान क्रिटिकल मिनरल्स सुरक्षा के लिए बनाए गए पांच बिंदुओं** पर आधारित है। **भारत ने इसका भी समर्थन** किया है।
  - इसके अलावा, G-7 देशों ने **विश्व बैंक के नेतृत्व वाले रेसिलिएंट एंड इंक्लूसिव सप्लाई चेन एन्हांसमेंट (RISE)** साझेदारी को मजबूत करने की भी प्रतिबद्धता जताई।
- **G-7 ने ट्रांसनेशनल रिप्रेशन (TNR) की निंदा की:** TNR एक प्रकार का उग्र विदेशी हस्तक्षेप है। इसमें कोई देश या उसकी एजेंसियां देश की सीमाओं से बाहर के लोगों या समुदायों को डराने, धमकाने या नुकसान पहुंचाने की कोशिश करती हैं।
- **प्रवासी तस्करी रोकने की प्रतिबद्धता:** इसे रोकने और इससे निपटने के लिए **G-7 कोएलिशन टू प्रिवेंट एंड काउंटर द स्मगलिंग ऑफ माइग्रेंट्स और 2024 G-7 एक्शन प्लान टू प्रिवेंट एंड काउंटर द स्मगलिंग ऑफ माइग्रेंट्स** शुरू किए गए।
- **G-7 के अध्यक्ष के रूप में कनाडा ने G-7 GovAI ग्रैंड चैलेंज** लांच किया। साथ ही, वह सार्वजनिक क्षेत्रक के भीतर AI को अपनाने में आने वाली रुकावटों को दूर करने के लिए नवोन्मेषी व मापन योग्य समाधानों को विकसित करने हेतु **"रैपिड सॉल्यूशन लैब्स"** की एक श्रृंखला की मेजबानी भी करेगा।
  - इसका उद्देश्य **संयुक्त राष्ट्र के ग्लोबल डिजिटल कॉम्पैक्ट के अनुरूप डिजिटल डिवाइड** की समस्या का समाधान करना है।

G-7 आउटरीच सत्र को संबोधित करते हुए, प्रधान मंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न प्रस्तुत किए:

- क्या देश केवल तब आतंकवाद के खतरे को समझेंगे जब वे स्वयं इसका शिकार बनेंगे?
- क्या आतंकवादियों और इससे पीड़ितों को एक समान माना जा सकता है?
- क्या वैश्विक संस्थाएं आतंकवाद पर मूक दर्शक बनी रहेंगी?

G-7 शिखर सम्मेलन के बारे में:

- यह एक **अंतर्राष्ट्रीय मंच** है। इसका आयोजन हर साल बारी-बारी से **G-7 सदस्य देशों- फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, जापान, इटली और कनाडा तथा यूरोपीय संघ (EU)** के नेताओं द्वारा किया जाता है।
  - G-7 की अध्यक्षता हर साल सदस्य देशों के बीच चक्रानुक्रम में रहती है। जिस देश के पास अध्यक्षता होती है, वह उस साल के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करता है
- **उत्पत्ति:** इसका गठन **1970 के दशक में ऊर्जा संकट के दौरान** व्यापक अर्थव्यवस्था, मुद्रा, व्यापार और ऊर्जा पर नीतियों का समन्वय करने के लिए किया गया था।

भारत में 'मगरमच्छ संरक्षण परियोजना' के 50 वर्ष पूरे हुए

विश्व मगरमच्छ दिवस 2025 की पूर्व संध्या पर भारत में 'मगरमच्छ संरक्षण परियोजना' की शुरुआत की स्वर्ण जयंती मनाई गई।

- ध्यातव्य है कि प्रत्येक वर्ष 17 जून को विश्व मगरमच्छ दिवस (World Crocodile Day) मनाया जाता है।

मगरमच्छ संरक्षण परियोजना के बारे में:

- **परियोजना की शुरुआत:** एच.आर. बस्टर्ड की सिफारिशों के आधार पर 1 अप्रैल, 1975 को यह परियोजना अलग-अलग राज्यों में औपचारिक रूप से शुरू की गई थी।
- **उद्देश्य:** मगरमच्छों के प्राकृतिक पर्यावासों का संरक्षण करना और कैप्टिव ब्रीडिंग के माध्यम से इनकी आबादी को तेजी से बढ़ाना।
- **तकनीकी और वित्तीय सहायता:** यह सहायता भारत सरकार के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) तथा खाद्य और कृषि संगठन (FAO) से प्राप्त होती है।

भारत में मगरमच्छ संरक्षण की सफलता:

- **ओडिशा की विशेष भूमिका:** ओडिशा भारत का एकमात्र ऐसा राज्य है, जहां मगरमच्छ की तीनों स्थानिक (नेटिव) प्रजातियों के लिए संरक्षण केंद्र मौजूद हैं। ये तीन संरक्षण केंद्र निम्नलिखित हैं:
  - **घड़ियाल:** टिकरपाड़ा (सतकोसिया);
  - **खारे जल का मगरमच्छ:** डांगमाल (भीतरकनिका); तथा
  - **मगर (मगरमच्छ):** रामतीर्थ (सिमिलिपाल)।
- **खारे जल के मगरमच्छ और मगर की संख्या में वृद्धि:**
  - **खारे जल का मगरमच्छ:** अब इनकी संख्या लगभग 2,500 हो चुकी है। इनकी सबसे अधिक संख्या ओडिशा के भीतरकनिका में है। यह प्रजाति अंडमान-निकोबार द्वीप समूह और सुंदरबन (पश्चिम बंगाल) में भी पाई जाती है।
  - **मगर:** इनकी संख्या बढ़कर 8,000–10,000 तक पहुंच गई है। यह प्रजाति एक बार फिर से अपने ऐतिहासिक प्राकृतिक क्षेत्र (जैसे गंगा नदी घाटी) में पाई जाने लगी है।
- **घड़ियाल संरक्षण:** राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य, कतर्नियाघाट वन्यजीव अभयारण्य, गंडक नदी, कॉर्बेट टाइगर रिजर्व, सोन घड़ियाल अभयारण्य जैसे संरक्षण क्षेत्रों में प्रतिवर्ष घड़ियालों के 400 से अधिक घोंसले दर्ज किए जा रहे हैं।
  - राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य तीन राज्यों में विस्तृत है।
- आज भारत में विश्व की 80% जंगली घड़ियाल आबादी मौजूद है।

वर्तमान में संचालित संरक्षण पहलें:

- इस वर्ष (2025) भारत ने एक 'नई घड़ियाल संरक्षण परियोजना' की घोषणा की है। इस नई परियोजना का उद्देश्य गंगा, ब्रह्मपुत्र व सिंधु नदियों तथा ओडिशा की महानदी में घड़ियालों की संख्या बढ़ाना है।
- **मद्रास क्रोकोडाइल बैंक:** यहां मगरमच्छों की ब्रीडिंग कराई जाती है और इनकी संख्या बढ़ाने वाले कार्यक्रमों का समर्थन किया जाता है।

भारत में मगरमच्छ की प्रजातियां
संरक्षण स्थिति और पर्यावास वितरण

खारे जल का मगरमच्छ
एस्चुअरी मगरमच्छ, लवणीय जल मगरमच्छ
IUCN: लीस्ट कंसर्न
WPA: अनुसूची-1
CITES: परिशिष्ट-1

दलदली भूमि (माश) का मगरमच्छ
मगर, चौड़ी थूथन वाला मगरमच्छ
IUCN: वल्नरेबल
WPA: अनुसूची-1
CITES: परिशिष्ट-1

घड़ियाल
मछली का शिकार करने वाला घड़ियाल, भारतीय घड़ियाल, लंबी थूथन वाला मगरमच्छ
IUCN: क्रिटिकली एंडेंजर्ड
WPA: अनुसूची-1
CITES: परिशिष्ट-1

IUCN: अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ
WPA: वन्यजीव संरक्षण अधिनियम
CITES: वन्य जीवों और वनस्पतियों की संकटापन्न प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन

मगरमच्छ के बारे में:

- **मगरमच्छ की प्रजातियां:** दुनिया भर में मगरमच्छ की 13 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें नाइल क्रोकोडाइल, खारे जल का मगरमच्छ आदि शामिल हैं।
  - इनमें से भारत में तीन नेटिव मगरमच्छ प्रजातियां पाई जाती हैं (इन्फोग्राफिक देखिए)।
- **सबसे बड़ी सरीसृप प्रजाति:** खारे जल का मगरमच्छ (saltwater crocodile) दुनिया में मगरमच्छ की सबसे बड़ी जीवित प्रजाति और सबसे बड़ी जीवित कशेरुकी (vertebrate) वर्ग की सरीसृप प्रजाति है।
- **विशेषताएं:** ये निशाचर और पॉयकिलोथर्मिक जीव हैं।
  - पॉयकिलोथर्मिक जीवों के शरीर का तापमान आस-पास के तापमान के साथ बदलता रहता है।

अन्य सुर्ख़ियां

नोथोपेगिया

शोधकर्ताओं ने 24-23 मिलियन वर्ष पुराने जीवाश्म पत्तों (fossil leaves) की खोज की है।

मुख्य खोजें:

- **खोज:**
  - ये पत्तियाँ नोथोपेगिया वंश की हैं, जो अब केवल भारत की पश्चिमी घाट में पाई जाती हैं।
  - यह इस वंश का अब तक का सबसे पुराना ज्ञात जीवाश्म रिकॉर्ड है।
- **प्रवासन और विलुप्ति:** नोथोपेगिया पूर्वोत्तर भारत से गायब हो गया, क्योंकि:
  - हिमालय के उत्थान के कारण जलवायु ठंडी हो गई।
  - वर्षा, हवा के पैटर्न में परिवर्तन।
  - स्थिर उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों के कारण पश्चिमी घाट में जीवित रहा।
- **नोथोपेगिया वंश के बारे में:**
  - **वितरण:** यह पौधा केवल भारत, बांग्लादेश और श्रीलंका में पाया जाता है।
  - **प्रजातियाँ:** इस वंश की 10–11 ज्ञात प्रजातियां हैं, जिनमें से 8 भारत में पाई जाती हैं — ज्यादातर पश्चिमी घाट और देश के दक्षिण-पश्चिमी हिस्सों में।

SCIAP

स्वच्छ भारत मिशन-शहरी (SBM-U) के तहत कुछ शहर अब घरों से कचरा इकट्ठा करने में इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) का इस्तेमाल कर रहे हैं।

- यह पहल सस्टेनेबल सिटीज़ इंटीग्रेटेड पायलट अप्रोच (SCIAP) प्रोजेक्ट के सहयोग से चल रही है।

SCIAP (2016) के बारे में:

- इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य भारत में टिकाऊ (सस्टेनेबल) शहरी योजना और प्रबंधन को बढ़ावा देने में यूएन-हैबिटेट की मदद करना है।
- इसे वैश्विक पर्यावरण सुविधा (GEF) द्वारा वित्त पोषित किया गया है तथा इसे संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (UNIDO) और यू.एन.-हैबिटेट द्वारा भारत सरकार के आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय (MoHUA) के साथ मिलकर चलाया जा रहा है।
- यह योजना फिलहाल पाँच शहरों में पायलट आधार पर चल रही है: भोपाल, गुंटूर, मैसूर, विजयवाड़ा और जयपुर।

नोनिया विद्रोह

केंद्रीय कृषि मंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी बुद्धू नोनिया को उनके शताब्दी समारोह में श्रद्धांजलि अर्पित की और **1770 के दशक में हुए नोनिया विद्रोह** के लिए नोनिया समुदाय की सराहना की।

- नमक सत्याग्रह के दौरान गांधी जी के आह्वान पर बुद्धू नोनिया ने नमक बनाने के आन्दोलन में भाग लिया। उन्हें धोखे से गिरफ़्तार किया गया और मार दिया गया।

नोनिया विद्रोह के बारे में

- **सन् 1770 के आस-पास, दो बड़े विद्रोह हुए:** सन्यासी विद्रोह और नोनिया विद्रोह (जो लगभग 1750 से शुरू होकर 30 साल तक चला)।
- **उद्देश्य: ब्रिटिश को देश से बाहर निकालना** था।
- **मुख्य केंद्र:** बिहार के **हाजीपुर, तिरहुत, सारण और पूर्णिया** जिलों में यह विद्रोह **लोनिया (नोनिया) समुदाय** द्वारा शुरू किया गया।
  - "लोनिया" शब्द की उत्पत्ति **संस्कृत शब्द 'लवण' (नमक)** से मानी जाती है।
  - यह समुदाय **नमक, शोरा (saltpetre), अम्ल (acid)** और **गंधक (sulfur)** बनाने के काम से जुड़ा हुआ था।

धनसिरी नदी

शोधकर्ताओं ने **धनसिरी नदी** की **प्रदूषण स्थिति** का अध्ययन करने के बाद उसे **पुनर्जीवित** करने के लिए नीतिगत सुझाव तैयार किए हैं।

धनसिरी नदी के बारे में:

- **उद्गम स्थल:** यह नदी नागालैंड के लाइसांग चोटी से निकलती है।
  - **प्रवाह मार्ग:** यह नदी **कार्बी आंगलोंग और नागालैंड** के बीच सीमा बनाती है।
  - **उप-सहायक नदियाँ:** काकोडोंगा और भोगदोई।
- **संगम:** यह नदी **ब्रह्मपुत्र नदी** से उसके **दक्षिणी तट** पर आकर मिलती है।
- **वन्यजीवों का समर्थन:** नदी के किनारे **धनसिरी रिजर्व फॉरेस्ट** और **इंटांगकी नेशनल पार्क** स्थित हैं।

सिंथेटिक अपर्चर रडार

NASA-ISRO SAR (सिंथेटिक अपर्चर रडार) मिशन अपने प्रक्षेपण के लिए इसरो के श्रीहरिकोटा स्थित स्पेसपोर्ट पहुंच गया है।

- NISAR लगभग हर 12 दिन में संपूर्ण पृथ्वी और बर्फ की सतहों का दो बार अवलोकन करेगा।

सिंथेटिक अपर्चर रडार (SAR) के बारे में:

- यह एक ऐसी **तकनीक है जिससे अंधेरे या बादल होने पर भी साफ तस्वीरें ली जा सकती हैं।**
- **कार्य-प्रणाली:** SAR सिस्टम सामान्य कैमरे की तरह दृश्य प्रकाश का उपयोग करने के बजाय ऊर्जा के स्पंदन (जैसे **माइक्रोवेव एनर्जी**) भेजता है तथा धरातल, समुद्र आदि से वापस टकराकर लौटने वाली ऊर्जा को **रिकॉर्ड करता है।**
- **यह 24/7 डेटा कलेक्ट कर सकता** है, क्योंकि माइक्रोवेव तरंगे बादल, धुआँ और हल्की बारिश में भी प्रवेश कर सकती हैं।

शिपकी ला दर्रा

हिमाचल प्रदेश की सरकार ने **किन्नौर जिले** में स्थित **शिपकी ला दर्रे** को घरेलू पर्यटकों के लिए खोल दिया है।

- इसे 2020 में **डोकलाम गतिरोध** के बाद बंद कर दिया गया था।

शिपकी ला दर्रे के बारे में:

- यह **भारत और तिब्बत (चीन) को जोड़ता** है।
  - शिपकी ला का प्राचीन नाम **पेमा ला या शेयर्ड गेट** था। बाद में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस ने इसका नाम बदलकर शिपकी ला कर दिया।
- **सतलज नदी** शिपकी ला से होकर भारत में प्रवेश करती है। तिब्बत में सतलज नदी को **लांगचेन ज़ंगबो** के नाम से जाना जाता है।

हिमाचल प्रदेश के अन्य महत्वपूर्ण दर्रे:

- **बारालाचा ला:** लाहौल और स्पीति को लद्दाख से जोड़ता है।
- **रोहतांग ला:** कुल्लू घाटी को लाहौल और स्पीति से जोड़ता है।
- **शिंगो ला/ शिंकु ला:** हिमाचल प्रदेश को लद्दाख से जोड़ता है।
- **बोरसू पास:** हिमाचल प्रदेश को उत्तराखंड से जोड़ता है।

अभ्यास शक्ति

यह अभ्यास कैंप लार्ज़ाक, ला कैवेलरी, फ्रांस में आयोजित किया जाएगा।

अभ्यास शक्ति (थल सेना) के बारे में

- **प्रकार:** भारत और फ्रांस के बीच द्विवार्षिक संयुक्त सैन्य अभ्यास।
- **फ्रांस के साथ अन्य संयुक्त अभ्यास:** अभ्यास वरुण (नौसेना) और अभ्यास गरुड़ (वायुसेना)।

बराक मैगेन

बराक मैगेन (लाइटनिंग शील्ड का हिब्रू नाम) ईरान के ड्रोन्स के खिलाफ इजरायल का सुरक्षा कवच है।

बराक मैगेन के बारे में:

- यह **इज़राइल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (IAI)** द्वारा विकसित एक **उन्नत नौसैनिक वायु रक्षा प्रणाली** है।
- इसे खतरों की एक विस्तृत श्रृंखला का मुकाबला करने के लिए डिजाइन गया है। इन खतरों में **UAVs (ड्रोन्स), क्रूज मिसाइल्स, उच्च प्रक्षेपवक्र वाले प्रोजेक्टाइल, और समुद्र से किनारे पर मार करने वाली मिसाइल्स** शामिल हैं।

इजरायल की अन्य प्रमुख रक्षा प्रणालियां:

- आयरन डोम,
- डेविड्स स्लिंग,
- ऐरो सिस्टम,
- लेज़र आयरन बीम।

डेविड्स स्लिंग और ऐरो सिस्टम को इजरायल और संयुक्त राज्य अमेरिका ने मिलकर विकसित किया है।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

NEWS

ईरान (राजधानी: तेहरान)

अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) ने सैटेलाइट इमेज के माध्यम से पुष्टि की है कि **ईरान के नतांज़ स्थल** पर यूरेनियम संवर्धन इकाइयों को **इजराइल के "ऑपरेशन राइजिंग लायन" हवाई हमलों** से नुकसान पहुंचा है।

- **ईरान की अन्य प्रमुख परमाणु सुविधाएं:**
  - फोर्दो संवर्धन सुविधा,
  - बुशहर परमाणु ऊर्जा संयंत्र,
  - इस्फ़हान परमाणु प्रौद्योगिकी केंद्र, आदि।

भौगोलिक अवस्थिति:

- **अवस्थिति:** ईरान मध्य-पूर्व में स्थित है। यह दक्षिण में **ओमान की खाड़ी** और **फारस की खाड़ी,** तथा उत्तर में **कैस्पियन सागर** से घिरा है।
- **पड़ोसी देश:** इसके उत्तर में **आर्मेनिया, अजरबैजान,** पश्चिम में **इराक,** उत्तर-पश्चिम में **तुर्की,** पूर्व में **अफगानिस्तान और पाकिस्तान** तथा उत्तर और उत्तर-पूर्व में **तुर्कमेनिस्तान** स्थित है।

भौगोलिक विशेषताएं:

- **भू-आकृति:** इसके अधिकांश भाग पर **ईरान के पठार** का विस्तार है। **दश्त-ए कविर, दश्त-ए लुत** इसके प्रमुख मरुस्थल हैं।
- **प्रमुख पर्वत:** इसके पश्चिमी भाग में **जाग्रोस पर्वत** तथा उत्तरी भाग में **एलबुर्ज पर्वत** स्थित है।